सल्तनतकालीन स्थापत्य

स्थापत्य कला किसी भी युग के चिंतन तथा दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति होती है। भारत में स्थापत्य की एक समृद्ध परम्परा थी जिसकी विशेषता थी धरणिक शैली (शहतीरी शैली) अर्थात् इसमें स्तंभ तथा शहतीर की प्रधानता थी। तुर्क अपने साथ एक नवीन शैली लेकर आये, जिसे मेहराबी शैली के नाम से जाना जाता है। इसका आधार था मेहराब एवं गुंबद का प्रयोग। अब चूँकि स्थापत्य को जोड़ने के लिए चूने तथा जिप्सम का प्रयोग आरंभ हो गया था। अत: मेहराब का निर्माण आसान हो गया।

■ आरम्भिक स्थापत्य

भारत में जब तुर्कों का आगमन हुआ, तो आरम्भ में उनके पास नये प्रकार के स्थापत्य निर्माण का वक्त नहीं था, इसलिए उन्होंने भारत में कुछ प्रचलित स्थापत्यों को ही मुस्लिम स्थापत्य के रूप में ढाल लिया। उदाहरण के लिए, कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा का निर्माण किया। वस्तुत: भारत में प्रचलित स्थापत्य तथा मुस्लिम स्थापत्य में दो विशेषतायें समान थीं। यही वजह है कि इन स्थापत्यों को इस्लामिक स्थापत्य में तब्दील करने में आसानी हुई। प्रथम, दोनों में खुले प्रांगण थे। दूसरे, दोनों में सजावट के लिए अलंकरण का प्रयोग किया जाता था।

कुतुब मीनार, दिल्ली

इसी काल में तुर्की विजय की स्मृति के प्रतीक के रूप में कुतुब मीनार (वर्तमान मेहरौली, दिल्ली) का भी सल्तनत कालीन स्थापत्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। कुतुब मीनार में इण्डो-इस्लामी स्थापत्य शैली की मूल विशेषता दृढ़ता तथा सौंदर्य की भरपूर झलक मिलती है। इसका निर्माण पूर्णतया लाल बलुआ पत्थर से किया गया है। इस मीनार का मुख्य आकर्षण इसके छज्जों को बनाने की कौशलपूर्ण विधि में है। मीनार की दीवारों पर धारीदार एवं कोणीय प्रक्षेपों के प्रयोग, पैनल एवं ऊपरी चरणों में लाल के साथ सफेद बालुआ पत्थरों के प्रयोग के कारण इसकी प्रभावनीयता और बढ़ जाती है।

■ इल्बरी वंश के स्थापत्य

भारत में स्थापित होने के पश्चात् तुर्की शासकों ने स्वतंत्र रूप में स्थापत्यों के निर्माण के लिए भारतीय स्थापत्यकारों को लगाया। अत: भारतीय स्थापत्य की शैली से मुस्लिम स्थापत्य का प्रभावित होना बहुत ही स्वाभाविक था। फिर आगे विभिन्न वंशों के अधीन मेहराबी शैली तथा शहतीरी शैली के बीच क्रमिक सामंजस्य होता रहा तथा फिर इस सामंजस्य के परिणामस्वरूप एक स्वतंत्र भारतीय शैली का विकास हुआ।

इल्बरी वंश के अधीन इल्तुतमिश के द्वारा स्थापत्य का निर्माण आरम्भ किया गया। उदाहरण के लिए, उसने कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा स्थापित कुतुबमीनार के कार्य को पूरा कराया, फिर उसने अपने बेटे राजकुमार मुहम्मद की स्मृति में सुल्तान-ए-गढ़ी का निर्माण कराया। आगे बलबन के मकबरे को एक महत्वपूर्ण स्थापत्य का दर्जा दिया जाता है तथा यह बताया जाता है कि पहली बार इसी स्थापत्य में वैज्ञानिक प्रकार के गुम्बद का विकास हुआ। किन्तु नवीन शोधों से यह स्थापित होता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा पहला वैज्ञानिक गुम्बद एवं मेहराब का उदाहरण है।

■ खिलजी स्थापत्य

खिलजी काल में चलकर मेहराबी शैली कुछ और भी वयस्क हुई। बताया जाता है अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा पहला वैज्ञानिक प्रकार के मेहराब एवं गुम्बद के प्रयोग का उदाहरण है। पहली बार संगमरमर का प्रयोग भी इसी स्थापत्य में मिलता है अर्थात् यह भारत का पहला ऐसा मुस्लिम स्थापत्य है, जिसमें संगमरमर का प्रयोग हुआ था। बताया जाता है अलाउद्दीन खिलजी एक ऐसी मीनार बनवाना चाहता था, जो कुतुबमीनार के आकार से दुगुनी हो, किन्तु असमय मृत्यु हो जाने के कारण वह इस काम को पूरा नहीं कर सका। फिर अलाउद्दीन खिलजी ने ही निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर 'जमायत-ए-खाना' मस्जिद का निर्माण कराया था। यह मस्जिद इस्लामी सिद्धांतों पर निर्मित प्रथम स्थापत्य का उदाहरण है।

अलाई दरवाजा, दिल्ली

■ **तुगलक स्थापत्य**

शैलीगत विकास की दृष्टि से तुगलक स्थापत्य का विशेष महत्व है। पूर्व काल की तुलना में तुगलक स्थापत्य में मेहराबी शैली तथा शहतीरी शैली के बीच बेहतर सामंजस्य देखने को मिलता है। तुगलक कालीन स्थापत्य निर्माण के लिए अच्छी निर्माण सामग्री के बदले मलबे का अधिकाधिक प्रयोग राज्य की आर्थिक कठिनाईयों की ओर संकेत करता है। गयासुद्दीन तुगलक तथा मुहम्मद-बिन-तुगलक के स्थापत्य में ढलवा दीवारों का प्रयोग हुआ है, इन्हें सलामी (Batter) कहा जाता था। तुगलक शासकों के द्वारा तीन मध्यकालीन नगरों का निर्माण करवाया गया था। उदाहरण के लिए, गयासुद्दीन तुगलक के द्वारा तुगलकाबाद, मुहम्मद-बिन-तुगलक के द्वारा जहाँपनाह और फिरोज शाह तुगलक के द्वारा फिरोज शाह कोटला। मुहम्मद-बिन-तुगलक के स्थापत्य में मेहराबी तथा शहतीरी शैली के बीच बेहतर सामंजस्य लाकर चतुष्कोणीय मेहराब का निर्माण किया गया। यह शैली आगे अकबर के अधीन फतेहपुर सीकरी के स्थापत्य में अपनाई गयी।

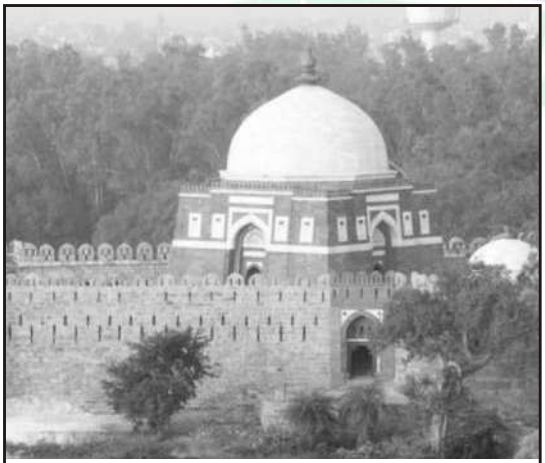

तुगलकाबाद का किला, दिल्ली

अगर हम फिरोजशाह तुगलक के स्थापत्य पर नजर डालते हैं, तो हमें ज्ञात होता है उसके स्थापत्य पर ढलवा दीवार अथवा सलामी का उपयोग नहीं हुआ है, किन्तु सजावट के लिए कमल का उपयोग हुआ है।

■ **लोदी स्थापत्य**

लोदी स्थापत्य में मेहराबी तथा शहतीरी शैली के बीच कहीं अधिक सामंजस्य देखने को मिलता है। इस काल में स्थापत्य का निर्माण बगीचे के बीच किया गया। साथ ही उनमें छज्जा एवं छतरियों का प्रयोग किया गया है। उपर्युक्त सभी भारतीय (हिन्दू) स्थापत्य के लक्षण हैं।

लोदी स्थापत्य की निम्नलिखित विशेषताएं रही हैं-

1. बगीचे के बीच स्थापत्य का निर्माण।
2. अष्टकोणीय आकार।
3. दोहरी परत वाले गुम्बद का प्रयोग।
4. स्थापत्य को ऊँचे चबूतरे पर बनाया जाना।

लोदी गार्डन, दिल्ली

मुगलकालीन स्थापत्य

मुगलों के अधीन एक बड़े क्षेत्र में संसाधनों का दोहन हुआ, इसलिए इस काल में स्थापत्य निर्माण के लिए बेहतर संसाधन उपलब्ध हुए। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कारणों से भी इस काल में स्थापत्य निर्माण को प्रोत्साहन मिला था। प्रथम, स्थापत्य निर्माण में मुगल बादशाहों की व्यक्तिगत रूचि भी थी, दूसरे, इस काल में स्थापत्य निर्माण से पूर्व स्थापत्य का खाका भी तैयार किया जाने लगा।

■ **बाबर और हुमायूँ**

बाबर, जब हिन्दुस्तान आया, तो उसे हिन्दुस्तान का स्थापत्य आकर्षित नहीं कर सका। उसका मानना था कि हिन्दुस्तान में जो स्थापत्य निर्मित किए गये थे, उनमें उचित अनुपात तथा संतुलन का अभाव था। उसे केवल ग्वालियर के स्थापत्य ने प्रभावित किया था। बाबर के द्वारा मस्जिदें बनाई गई थीं। उदाहरण- पुराने लोदी किले में निर्मित एक मस्जिद, पानीपत में निर्मित एक स्मारक मस्जिद। इसी प्रकार बाबर ने

एक उचित पद्धति का प्रयोग करते हुए कुछ बेहतर किस्म के बागों को स्थापित किया था। उदाहरण के लिए, आरामबाग आदि। बाबर की तरह हुमायूँ को भी स्थापत्य निर्माण के लिए समय नहीं मिल सका। उसके द्वारा भी कुछ मस्जिदों का निर्माण कराया गया था। किन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी हमीदा बानू बेगम ने उसका मकबरा बनवाया, वह एक अनुपम कृति है।

राम बाग, आगरा

इस मकबरे में इस्लामी तथा हिन्दू शैलियों के बीच समन्वय देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, यह चारबाग शैली में निर्मित है। बाग के बीच स्थापत्य के निर्माण पर हिन्दू स्थापत्य का प्रभाव माना जा सकता है, उसी प्रकार छतरियों का प्रयोग भी हिन्दू स्थापत्य का लक्षण है, उसी तरह दोहरे परत वाले गुम्बद का प्रयोग, मीनारों का प्रयोग आदि इस्लामी स्थापत्य की ओर संकेत करता है। हुमायूँ के मकबरे में मुगल राजस्व के दैवीकरण का भी प्रयास दिखता है। एक बाग के बीच मकबरे के निर्माण का संदेश यह है कि यह एक पवित्र आत्मा है, इसे शांति से सोने दो।

■ अकबर कालीन स्थापत्य

अकबर एक महान निर्माता था, उसने दो चरणों में निर्माण कार्य को पूरा किया था। प्रथम चरण में उसने आगरा, इलाहाबाद और लाहौर में किले बनवाये थे। फिर दूसरे चरण में उसने फतेहपुर सीकरी में निर्माण कार्य पूरा किया।

अकबर के स्थापत्य लाल पत्थरों में निर्मित हैं तथा अत्यधिक भव्य हैं। उसके स्थापत्य में मुगल बादशाहत की शक्ति एवं ओज व्यक्त हुए हैं। इसमें एक बनते हुए साम्राज्य की झलक मिलती है।

अबुल फजल कहता है कि अकबर ने आगरा में महान स्थापत्यों का निर्माण कराया। बताया जाता है कि गुजरात एवं बंगाली शैली में 500 से अधिक स्थापत्य निर्मित किए गये थे। किन्तु शाहजहाँ ने उन्हें ध्वस्त कर दोबारा नये स्थापत्यों का निर्माण कराया। इसलिए वर्तमान में आगरा में केवल जहाँगीरी और अकबरी महल, अकबर के काल के हैं।

अकबर के स्थापत्य में शहतीरी शैली की प्रधानता दिखती है। उसने मुख्यतः शहतीरी शैली में ही स्थापत्यों का निर्माण कराया। केवल अलंकरण के लिए मेहराबी शैली का प्रयोग किया गया।

अकबर ने फतेहपुर सीकरी का निर्माण गुजरात विजय के पश्चात् आरम्भ किया था। फिर बुलन्द दरवाजा का निर्माण दक्कन विजय के पश्चात् हुआ।

पंच महल, फतेहपुर सीकरी

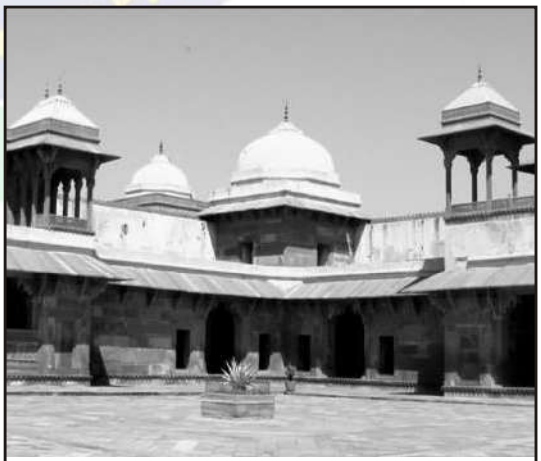

जोधाबाई महल, फतेहपुर सीकरी

बुलन्द दरवाजा, फतेहपुर सीकरी

■ जहाँगीर कालीन स्थापत्य

आगे जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में स्थापत्य का क्रमिक विकास देखने को मिलता है। जहाँ अकबर के स्थापत्य में शक्ति और ओज व्यक्त हुआ, वहीं जहाँगीर और शाहजहाँ के स्थापत्य में स्त्रियोचित सौंदर्य व्यक्त हुआ है। जहाँगीर के काल के तीन महत्वपूर्ण स्थापत्य मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. अकबर का मकबरा (आगरा)
2. अब्दुर रहीम खान-ए-खाना का मकबरा (दिल्ली)
3. एतमाद्उद्दौला का मकबरा (आगरा)

अलंकरण और सजावट के लिए जहाँगीर ने निम्नलिखित पद्धति पर बल दिया–

1. संगमरमर की जाली का प्रयोग
2. पित्रादुरा का उपयोग।

वस्तुत: इस काल में सफेद संगमरमर के भवन बनने लगे थे। इसलिए अब अन्य रंग के अर्द्धकीमती पत्थरों से फूल-पत्तियों के रूप में उन्हें सजाया जाने लगा।

एतमादुद्दौला का मकबरा, आगरा

■ शाहजहाँ कालीन स्थापत्य

शाहजहाँ को स्थापत्य में विशेष रूचि थी। उसने विभिन्न किलों तथा अनेक भवनों का निर्माण कराया। उदाहरण के लिए, उसने आगरा किले में अकबर के भवनों को तुड़वाकर सफेद संगमरमर के नये भवनों का निर्माण कराया। फिर उसने दिल्ली में शाहजहाँबाद नामक नई राजधानी बनाई तथा वहाँ लाल किले का निर्माण कराया। लाल किले के अन्तर्गत भी अनेक भवन बनाए गये। शाहजहाँ के द्वारा भी सफेद संगमरमर में अनेक भवनों का निर्माण कराया गया। उसने भवनों के अलंकरण के लिए संगमरमर की जाली तथा पित्रादुरा का प्रयोग जारी रखा। साथ ही उसने सजावट के लिए एक और भी पद्धति अपनाई, वह है–बहुस्तरीय मेहराब का प्रयोग।

शाहजहाँ के काल की सबसे अनुपम कृति है– ताजमहल। ताजमहल के निर्माण में मुगल स्थापत्य की लगभग सभी विशेषताएं उभरकर आयी हैं। उदाहरण के लिए –

- चारबाग शैली
- दोहरी परत वाले गुम्बद का प्रयोग
- छतरियों का प्रयोग
- सजावट के लिए पित्रादुरा का प्रयोग
- ऊँचे चबूतरे पर स्थापत्य का निर्माण

■ औरंगजेब कालीन स्थापत्य

औरंगजेब के काल में आकर स्थापत्य का पतन देखा गया। उसके काल के तीन ही स्थापत्य प्राप्त होते हैं और ये भी स्थापत्य प्रभावी नहीं हैं। ये स्थापत्य हैं–

- दिल्ली की मोती मस्जिद
- लाहौर की बादशाही मस्जिद
- औरंगाबाद में राबिया दुर्रानी का मकबरा

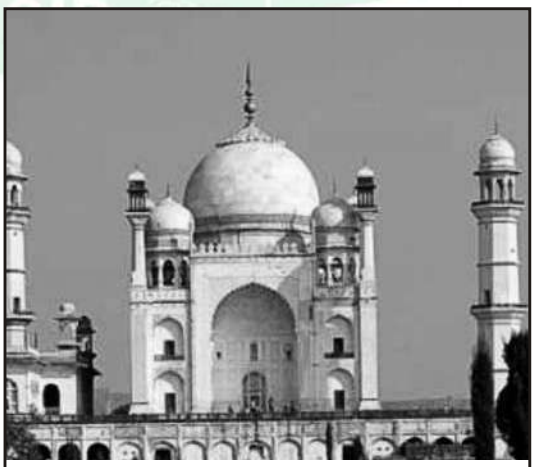

राबिया-उद्-दौरानी का मकबरा (बीबी का मकबरा)

■ **शेरशाह कालीन स्थापत्य-**

शेरशाह को न केवल प्रशासन और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में, अपितु स्थापत्य के क्षेत्र में भी अकबर का पूर्वगामी करार दिया गया है। बताया जाता है अकबर से पूर्व शेरशाह ने स्थापत्य निर्माण में मेहराबी एवं शहतीरी शैली के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया। शेरशाह द्वारा निर्मित सासाराम स्थित उसका मकबरा उसके स्थापत्य का बेहतर नमूना प्रस्तुत करता है। यह तालाब के बीच बनाया गया था। इसमें शहतीर का बेहतर प्रयोग मिलता है। साथ ही, हिन्दू शैली के प्रभाव में इसे अनेक छतरियों से सजाया गया है। यह स्थापत्य एक ऊँचे चबूतरे पर निर्मित था तथा इसमें दोहरे परत वाले गुम्बद की जगह एक ही गुम्बद का प्रयोग मिलता है। शेरशाह के स्थापत्य में शक्ति एवं आत्मविश्वास झलकता है।

शेरशाह का मकबरा, बिहार

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR